रजि० नं० बी ४४४८

साम्प्रदायिक मनोवृत्ति

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १२ सम्पादक – किशोरलाल मशरूवाला अंक ४६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १६ जनवरी, १९४९

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

दूसरा पहलू

कांग्रेस और कांग्रेसियोंसे लोगोंके असन्तुष्ट होनेके कारण तो काफी हैं, फिर भी अगर लोग और कांग्रेसकी विरोधी पार्टियाँ यह मानें कि देशकी हालतको ठीक करनेके लिअे कांग्रेसियोंको ही अपने व्यवहार ठीक करने चाहियें, तो यह अेक बड़े भारी जोखमकी बात होगी। कांग्रेसी तो देशका अेक सिर्फ छोटासा हिस्सा हैं, और सब कुछ कहने और करनेके बाद भी शायद वे समाजके ज्यादा अच्छे दर्जेके लोग हैं। आज जैसी हालत है, अुसमें मुझे अैसी कोअी संस्था नहीं दिखाअी देती, जो व्यक्तिगत और सार्वजनिक कामोंकी दृष्टिसे कांग्रेससे बेहतर नियमोंके आधार पर संगठित हो, या अुसकी जगह लेने पर विशेष लाभ पहुँचा सकती हो। कांग्रेस खुद अिस बात पर जोर देती है और अपने मेम्बरोंकी कमजोरियोंके प्रति सतर्क है, यह हकीकत ही अेक बड़ी महत्वकी और आशाकी निशानी है। संभव है अपने मुख्य नेताओंके शुद्ध करनेवाले असरके नीचे वह गिरनेके पहले ही अपनी कमजोरियाँ निकाल फेंके। लेकिन कांग्रेसको भलाबुरा कहनेवाले टीकाकार अपने मनको तसल्ली देनेके लिअे अगर यह रुख अख्तियार कर लें कि अुनके चालचलनका दरजा दूसरोंसे बहुत अूँचा है या यह मान लें कि सरकार और कांग्रेसियोंको ही सुधरना या बरबाद होना है और अुन्हें अिस बारेमें कुछ नहीं करना है, तो अिससे खुद अुनको ही नुकसान हो सकता है।

अिसलिअे जब जरूरी होने पर मैं कांग्रेस सरकार और कांग्रेसियोंकी बगैर किसी संकोचके नुक्ताचीनी करता हूँ, तो अुस काममें मुझे कोअी आनन्द नहीं मिलता। अगर मैंने कभी यह कहा है कि कांग्रेस मर जायगी या बरबाद हो जायगी, तो अिसका मतलब यह नहीं कि मैं यह चाहता हूँ या अुसे अैसा शाप देता हूँ। यह तो मैं दोस्तीकी भावनासे और कांग्रेसका पुराना सेवक होनेके नाते कहता हूँ।

जो कांग्रेसके लिअे जरूरी है, वह राष्ट्रके लिअे तो और भी ज्यादा जरूरी है। हम सबको अूँचे चरित्रवाले बनना है। हम सबको अीश्वरकी तरफ यानी सचाअी, नेकी, अीमानदारी, सफाअी, प्रेम और दूसरोंके सुख-दुःखका खयाल रखनेकी भावनाकी ओर जाना है। हम यह समझ लें कि अीश्वरको हम अपने जीवनसे अलग करके खुश और संतुष्ट नहीं हो सकते।

बम्बअी, ३–१–'४९ किशोरलाल मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

महादेवभाअीकी डायरी
[पहला भाग]
संपादक : नरहरि परीख; अनु० रामनारायण चौधरी
कीमत ५–०–० डाकखर्च ०–१२–०
नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद

कार्यकर्ताओंको सलाह

[गांधी नगर, जयपुरमें विधायक कार्यकर्ता सम्मेलनमें ता० २०–१२–'४८ को दिया हुआ विनोबाजीका भाषण।]

अिस सम्मेलनके अुद्देश्यके विषयमें मुझे कुछ साफ खयाल नहीं है। अिसलिअे सर्व सामान्य तौर पर कुछ बुनियादी विचार आपके सामने रखकर मैं सन्तोष मानूँगा।

पहली बात : आजकल रचनात्मक काम करनेवालोंके मनमें कांग्रेसके बारेमें बहुत कुछ असन्तोष है। मैं अुस असन्तोषकी बात नहीं करता हूँ, जो कि कांग्रेसमें पैठे हुअे दोषोंके सम्बन्धमें है। वह असन्तोष कांग्रेसवालोंमें भी है। वह अुचित भी है, और सबको होना चाहिये। लेकिन मैं अेक दूसरे असन्तोषकी बात करता हूँ। वह असन्तोष अिसलिअे है कि गांधीजीकी सूचनाके अनुसार कांग्रेसने मिट जाना पसन्द नहीं किया, और लोक सेवक संघमें अपनेको बदल नहीं दिया। मैं मानता हूँ कि कांग्रेसकी स्थिति ठीक तरहसे न समझनेके कारण यह असन्तोष है।

कांग्रेसने अपना राजकीय रूप कायम रखनेका आग्रह क्यों रखा? अिसलिअे कि अुन लोगोंको लगा कि अैसा अगर वे नहीं करते तो देशमें बहुतसे राजकीय पक्ष खड़े हो जाते, जिससे अव्यवस्था पैदा होती और स्वराज्यके टुकड़े टुकड़े हो जाते। अिसलिअे अुन्होंने सोचा कि जब तक देशमें सुव्यवस्था नहीं हो जाती, तब तक कांग्रेसको अेक राजकीय पक्षके रूपमें रहना जरूरी है। अगर कांग्रेसका यह दृष्टिकोण हम समझ लें, तो अुसको हम अधिक दोष नहीं देंगे। क्योंकि अिसके पीछे अेक विचार श्रेणी है। विचार भेदसे वस्तुदर्शन भी भिन्न हो जाता है। राजकीय पक्षकी हैसियतसे रहनेमें खतरा है, यह बात वे लोग भी जानते हैं। पर वैसे न रहनेमें वे लोग ज्यादा खतरा देखते हैं। अिससे अुलटे, बापूने सोचा था कि स्वराज्यके बाद कांग्रेसका मुख्य कार्य सामाजिक और नैतिक अुत्थानका रहेगा। अिसलिअे कांग्रेस अगर लोक सेवक संघके रूपमें बदल जाती है, तो अधिक सेवा कर सकेगी और अपना नैतिक तेज रख सकेगी, जिससे राजका कारोबार तो अनायास ही ठीक दिशामें चलेगा।

अिस तरह ये दो अलग अलग दृष्टिकोण हैं। दोनोंमें कुछ गुण हैं, कुछ कमियाँ भी हो सकती हैं। कांग्रेसवालोंने अपने दृष्टिकोणके दोषको महसूस भी किया है। अुसे कम करनेके लिअे अुन्होंने बापूके अुस अंशको स्वीकार कर लिया जिसमें अुन्होंने चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ, तालीमी संघ, वगैरा संस्थाओंको लोक सेवक संघकी रचनामें जोड़नेकी बात कही थी। कांग्रेस लोक सेवक संघ तो नहीं बनी, लेकिन अिन संस्थाओंको अपने साथ जोड़नेकी अुसने तैयारी बतलाअी। अिस तरह कांग्रेसवाले दोनों हाथोंमें लड्डू रखना चाहते हैं। और अगर कांग्रेसके अिस अच्छे अुद्देश्यको समझकर अुसको अुचित

www.vinoba.in

सहकार दिया गया तो शायद जो लाभ वे चाहते हैं, वह मिल भी जाय; बशर्ते कि पैठे हुअे और हो सकनेवाले दोषोंको हटानेकी सावधानी रखी जाय। अगर आप कांग्रेसकी यह दृष्टि ध्यानमें लेंगे, तो आपको अुसकी ओरसे अुतना असन्तोष नहीं होगा।

अब दूसरी बात: रचनात्मक कार्यकर्ताओंमें मैं आजकल कुछ मायूसी-सी देखता हूँ। असलमें अुसके लिअे कोअी कारण नहीं है। अगर हमारी आशा-निराशा हमेशा बाहरी परिस्थिति पर निर्भर रही, तो हमारी हालत डाँवाडोल रहेगी। परिस्थितिके झोकोंसे हम कभी अुत्साहित होंगे, कभी निरुत्साहित। हम तो अेक निश्चित विचार पर खड़े हैं। अुस विचारको खण्डित करनेवाला कोअी दूसरा निश्चित विचार हमारे सामने खड़ा नहीं है। हमसे अलग विचारधारा जो आज दिखाअी देती है, अुसमें निश्चित कुछ भी नहीं है। संशय और अनिश्चय ही है। निश्चित विचार रखनेवाले अनिश्चित विचार श्रेणीका डर नहीं रखते। संशय और अनिश्चय तो अन्धकार जैसा है। सामने कितना ही अन्धकार दिखाअी देता हो, दीपकके लिअे तो वह अनुकूल ही है। रात तो अमावस्याकी है, अब मेरा क्या होगा, अैसा वह नहीं सोचता। अुलटे, अैसी रात तो अुसके प्रकाशके लिअे अच्छी पार्श्वभूमि बन जाती है। और मान लो कि कोअी निश्चित विचारधारा हमारे खिलाफ खड़ी है, तो भी हम निराश क्यों बनें? तब तो लड़ाअीका मौका होगा! अुससे तो अुत्साह ही बढ़ना चाहिये। जिसका विचार सही होगा, वही आखिरमें जीतेगा।

बात असलमें यह है कि हमारे निजके विचारोंकी ही सफाअी नहीं हुअी है। अिसलिअे निराशा मालूम होती है। हमें अपने विचारोंमें दृढ़ होनेकी जरूरत है। हमने मान लिया है कि हम कुछ निश्चित विचार रखते हैं। लेकिन जितनी गहराअीसे सोचना चाहिये, अुतनी गहराअीसे हमने नहीं सोचा है। हमारे विचारोंके बारेमें हम अभी तक अनिश्चित अवस्थामें हैं। अगर अैसा है तो मैं कहूँगा कि यह निराशाके लिअे नहीं, बल्कि गहराअीसे सोचनेके लिअे कारण है। अगर अपने विचारोंको रखते हुअे हम आशावान नहीं रह सकते, तो मैं कहूँगा कि अुन विचारोंको छोड़कर आशावान बनें। मतलब यह कि हमें हर हालतमें आशावान रहना चाहिये।

विचारकी मजबूतीके लिअे जरूरत है चिन्तन और आचरणके योगकी। अिसीमें जीवनकी पूर्णता भी है। मैं देखता हूँ कि हममेंसे जो लोग प्रत्यक्ष काममें लगे हुअे हैं, वे बैठकर चिन्तन कम करते हैं, और जो चिन्तनशील हैं वे कोअी खास प्रत्यक्ष काम नहीं कर रहे हैं। अिस तरह जहाँ चिन्तन और आचरणका विभाजन या विच्छेदन (जुदापन) होता है, वहाँ दोनों निर्जीव हो जाते हैं। अगर मेरी राय ठीक है तो कार्यकर्ताओंको चिन्तनसे अपने कामकी पूर्ति करनी चाहिये और जिन्होंने चिन्तनपूर्वक अनेक वादोंका परीक्षण करके हमारे विचारको सही पाया है, अुनको कुछ अमली काममें लग जाना चाहिये। चिन्तनके साथ जब आचरण होगा, तभी आगेका रास्ता सूझेगा। जो मनुष्य अेक मंजिल पर चढ़कर स्थिर हो जाता है और आगे चढ़ना छोड़कर वहीं आँखें फाड़-फाड़कर देखनेकी कोशिश करता है, वह विस्तृत दर्शन नहीं पा सकता; चाहे अुतने ही क्षेत्रको वह अधिक साफ भले देख ले। पहाड़ पर चढ़नेका जिनको अनुभव है, वे अिस चीजको अच्छी तरहसे समझ सकेंगे। जिस भूमिका पर हम खड़े हैं, अुससे अूँची भूमिका पर चढ़े बिना केवल बुद्धिके तनावसे और आँखोंके खिंचावसे दर्शनविकास नहीं हो सकता। चिन्तकोंके चिन्तनकी प्रगति आचरणके अभावमें रुक गयी है। चिन्तनके अभावके कारण काम करनेवालोंको सूझ नहीं रहा है। दोनोंको अपनी अपनी कमियाँ पूरी कर लेनी चाहियें। तब विचार पक्के होंगे, सूझ बढ़ेगी और निराशाका दर्शन नहीं होगा।

अब तीसरी बात: हमारे लोग जो अलग अलग जगह काम करते हैं, अुन्हें अपने कामके दो हिस्से समझ लेने चाहियें। अेक यह कि जिस देहातमें वे काम कर रहे हों वहाँ पर स्वराज्यके सब अंगोंका विकास करना है, अैसा समझकर काम करें। अिस कामका दूसरा हिस्सा यह है कि आसपासके देहातोंमें वे हमेशा घूमते रहें। अिसे मैंने परिक्रमा नाम दिया है। अपने तहसीलके सारे देहातोंको भगवानका अेक विशाल मन्दिर समझकर अुसकी परिक्रमा करें। अुसका परिणाम अपने मध्यवर्ती केन्द्रको निवेदन करें। घूमते हुअे देखें कि कौनसी जगह विशेष अनुकूल है, जहाँ बैठकर काम शुरू किया जा सकता है। फिर जो पाँच-छह गाँव हम चुनें, अुनमें ही अेक आदर्श पेश करनेकी कोशिश करें। अुसके साथ आसपासके देहातोंमें घूमना भी जारी रखें। अिस तरह घूमनेसे चारों ओर अच्छा वातावरण बना रहेगा, जिसका असर हम जिस देहातमें काम करते होंगे, अुस पर पड़ेगा। और देहातके कामका असर चारों ओरके वातावरण पर पड़ेगा। ये दोनों बातें चलती रहेंगी, तब हम आगे बढ़ेंगे। कार्यकर्ता किसी अेक स्थानमें बैठ जाते हैं और आसपास घूमते नहीं, तो आसपासकी मन्दताका असर अुन पर होता है और अुनका अुत्साह कम हो जाता है। वैसे ही अगर केवल घूमते रहते हैं, तो थक जाते हैं और मनमें विचार आता है कि परिक्रमा तो बहुत कर चुके, कुछ ठोस काम भी करना चाहिये। अिसका अुपाय यही है कि हममेंसे कुछ लोगोंको स्थिरतासे काम करते रहना चाहिये, और कुछको घूमते रहना चाहिये। बीच बीचमें स्थिर बैठनेवाले घूमनेका काम करें। और घूमनेवाले स्थिर काम करें। अिस तरह दोनों मिलकर अनुभवोंकी पूर्ति करेंगे, तो हमारे स्थिर कार्यका प्रकाश चारों ओर फैलेगा।

अब चौथी बात: देहातमें जो लोग काम करेंगे, वे जुदे जुदे न पड़ जायँ अिसकी भी फिक्र रखनी चाहिये। अैसा विभाजन नहीं होना चाहिये कि कार्यकर्ता कहीं दूर काममें लगे रहें और नेता अपने निज धाममें बैठा हुआ हिदायतें देता रहे। दोनोंके बीच अविच्छिन्न सम्बन्ध होना चाहिये। यह सम्बन्ध प्रत्यक्ष कामके द्वारा ही हो सकता है। अर्थात् कार्यकर्ता जैसे काममें लगा हुआ है, वैसे ही नेताके हाथमें भी कुछ काम हो, जिसके अनुभवके आधार पर वह कार्यकर्ताकी अुलझनें हल करता रहे। अैसी स्थिति होनी चाहिये। कार्यकर्ताके साथ नेताका अगर अमली काममें हाथ न रहे, तो दोनोंकी कल्पनाओंमें कोअी मेल नहीं रहता। अिससे कार्यकर्ता नेताओंसे और नेता कार्यकर्ताओंसे असन्तुष्ट होते हैं। फिर वे अेक दूसरेको दोष देने लगते हैं। यह दोषोंकी लेन-देन मिटकर गुणोंकी लेन-देन होनी चाहिये। वह तभी हो सकती है जब आफिसमें बैठे हुअे मार्गदर्शकके लिअे कोअी प्रत्यक्ष काम भी रहे और अुसका मार्गदर्शन अनुभव युक्त हो, कोरा काल्पनिक नहीं। अेक पृथ्वी पर और दूसरा हवामें, यह नहीं होना चाहिये।

हमारे काममें समग्र दृष्टि होनी चाहिये, अिस बातको मैं नहीं दुहराअूँगा। यह बात तो हमारे सामने आ गयी है। लेकिन अभी तक अिसका हम ठीक अमल नहीं कर पाये हैं। अिस विषयमें अेक सूचना देना चाहता हूँ। जब हम समग्र दृष्टि रखनेका सोचते हैं, तो पच्चीसों चीजें देखते हैं, और अेकके भी हम माहिर नहीं बनते। अिससे अेक भी काम ठीक नहीं हो पाता। अिसलिअे हमारे पूर्वजोंका अेक अनुभवसिद्ध कथन है: 'अेक हि साधे सब सधे, सब साधे सब जाय'। समग्र दृष्टिके लिअे अेक ही मन्दिरमें अनेक देवताओंको भर देनेकी जरूरत नहीं। अेक मूर्तिमें सब मूर्तियोंका अंश देखनेवाली प्रतिभाकी जरूरत है। हम खादी या सफाअी या कोअी काम करते हैं, तो वह अिस ढंगसे करें कि यद्यपि हम अेक ही काम करते हुअे दिखाअी दें, फिर भी अुसमें हमारा समग्र दर्शन प्रकट हो सके। यानी हमारी दृष्टि व्यापक हो, कृति (काम) विशिष्ट या खास रहे। अगर दृष्टि विशिष्ट रखते हैं तो संकुचित बनते हैं। अिससे अुलटे, अगर कृति व्यापक करने जाते हैं, तो हाथमें कुछ नहीं

www.vinoba.in

आता । विशिष्ट कृतिके साथ व्यापक दृष्टि और व्यापक दृष्टिके साथ विशिष्ट कृति, अिस तरह हम काम करेंगे तो हमारा काम अपने आप ही समग्रताका दर्शन दे सकेगा ।

रचनात्मक कामके बारेमें ये मेरी चन्द सूचनायें हैं ।

दा० मूं०

हिन्दुस्तानी सभ्यताकी मध्यबिन्दु — गाय

गोसेवक सम्मेलनके खोलनेके मौके पर तारीख १६–१२–'४८को गांधीनगरमें श्री विनोबाजीने नीचेका भाषण दिया :

हिन्दुस्तानमें सचमुच गोसेवाके काममें कोअी खास कठिनाअी नहीं होनी चाहिये, क्योंकि अुसमें हमारा ही स्वार्थ है । अिसके बगैर हिन्दुस्तानमें मानव जीवन अशक्य जैसा है । अभी तो हिन्दुस्तानके किसानको खेतीके लिअे बैलोंका ही आधार है । ट्रेक्टरोंका थोड़ा दर्शन अिन दिनों होने लगा है, फिर भी ट्रेक्टर किसानको खास आधार देनेवाले नहीं हैं । अेक तो हमारे देशमें ट्रेक्टर बनते नहीं और दूसरी मुश्किल यह है कि अुनका गुजारा घासचारे पर नहीं होता । वे पेट्रोल माँगते हैं, जो हमारे देशमें नहीं होता । अिन पर आधार रखेंगे, तो अैन मौके पर वे हमें दगा देंगे ।

अिस हालतमें जाहिर है कि तब तक हमें बैलोंका आधार लेना होगा, जब तक कि हम हाथोंसे खेती करनेकी हिम्मत नहीं करते । मैं मानता हूँ कि हाथोंसे खेती हो सकती है । छोटे छोटे औजारों द्वारा हाथोंसे खेती करनेके प्रयोग जरूर होने चाहियें । लेकिन यह आगेका विषय है । अभीकी हालतमें तो बैलोंका स्थान रहने ही वाला है । गोसेवाका मध्यबिन्दु बैल ही है । वही हमारा कृषि देवता है । अिसलिअे हमारे पूर्वजोंने बहुत सोचकर मानव जीवनके साथ गोसेवाको जोड़ दिया है । अुससे मानव जीवन आसान और प्रेममय बन जाता है ।

जैसे बैलके बिना हमारा काम नहीं चलता, वैसे गायके दूधके बिना हमारे बच्चोंका काम नहीं चलता । अपनेसे अलग किसी दूसरी जातिके दूध पर आधार रखनेकी दशा शायद मानवके सिवा और किसीकी नहीं है । यह अीश्वरकी योजनाके खिलाफ है । लेकिन जिस हालतमें अभी हम अपनेको पाते हैं, अुसमें अुससे मुक्त होना कठिन है । मांसाहार छोड़नेका प्रयोग खासकर हिन्दुस्तानमें ही शुरू हुआ । मांसमेंसे मुक्त होनेके लिअे सन्तोंको दूधका ही आधार दिखायी दिया । अिसलिअे दूधकी महिमा हिन्दुस्तानमें बढ़ी । और मैं मानता हूँ कि दूसरे देशोंमें भी जैसे जैसे जन संख्या बढ़ती जायगी, जमीन कम होती जायगी, आजके जितना गोश्त नहीं मिल सकेगा, वैसे वैसे दूधकी महिमा भी बढ़ती जायगी । यह भविष्यकी बात नहीं, आज भी अैसा हो रहा है । अमेरिकन डॉक्टर कहने लगे हैं कि मनुष्यके लिअे गोश्तसे दूध ज्यादा मुफीद है । जो अनुभव यूरोप और अमेरिकाको आज हो रहे हैं, वे हमारे पूर्वजोंको पहले ही हो चुके थे । हो सकता है कि हजार सालके बाद दूधका भी आधार छोड़कर साग-तरकारी या फल पर मानवको रहना पड़े । जैसे जैसे मनुष्योंकी तादाद बढ़ेगी और विज्ञान आगे बढ़ेगा, वैसे यह बात ध्यानमें आ जायगी । लेकिन यह आगेकी बात है ।

अिस तरह जब ये दो बातें स्थिर हो जाती हैं कि बैलोंके आधार पर खेती है और दूधके आधार पर हमारा जीवन है, तब गोसेवा खुदकी सेवा हो जाती है । अिसलिअे गोसेवा मुश्किल नहीं होनी चाहिये । कुछ लोग कहते हैं कि गायका दूध महँगा होता है और अिसलिअे हमें अुसकी आशा छोड़नी चाहिये । लेकिन मैं कहता हूँ कि अगर दूधके बिना चल सकता है, तो अुसे आज ही छोड़ दो । महँगे सस्तेकी बात मत सोचो । किन्तु अगर अुसके बिना नहीं चलता है, तो यही समझो कि दूध महँगा नहीं है । जितनेमें वह पड़ता है, सस्ता ही है । अनाजके बारेमें यह महँगाअीकी दलील हम नहीं करते, क्योंकि हम जानते हैं कि अनाजके बिना हम जिन्दा नहीं रह सकते । अिसलिअे अुसके लिअे जो भी दाम होंगे और जो भी मेहनत होगी, वह सब हम सस्ती मानते हैं । वैसा ही दूधका समझना चाहिये । बैलकी जरूरत और दूधकी जरूरत ध्यानमें लेकर गोसेवामें हमें बुद्धि लगानी चाहिये । वैसा करेंगे तो और भी बातें सूझेंगी । हमारा देहाती जीवन गायके आधार पर रचा हुआ है । मशीनोंकी मर्यादा हमें गाय बैल सिखाते हैं । जब तक हम बैल खाना तय नहीं करते, तब तक खेतीके काममें बैलकी जगह मशीनका प्रवेश हो नहीं सकता ।

लेकिन आज गाय बैलका हमें बोझ मालूम होता है । किसीको गायका, किसीको बैलका । असलमें बात अैसी है कि हिन्दुस्तानमें आज मानवको खुदका भी बोझ मालूम हो रहा है, क्योंकि वह जीनेकी कला ही भूल गया है । बच्चे पैदा होते हैं, अुसका शास्त्र हम नहीं जानते । अुनके पालन पोषणका भी शास्त्र हम नहीं जानते । वे मर जाते हैं तो यही समझते हैं कि अुनका नसीब खतम हो गया, अिसलिअे वे मर गये । गायको हम माता कहते हैं, लेकिन हिन्दुस्तानमें गायका गोश्त जितना सस्ता है अुतना दूसरा नहीं । यह बात हमें शोभा नहीं देती । हमने गायको माताका सिर्फ नाम दिया है, लेकिन अुसके लिअे जो काम करना चाहिये वह नहीं किया । अगर गौ माताकी अुचित सेवा करनेकी बात हम सोचेंगे, तो गायका भार नहीं मालूम होगा । खराब गाय-बैलकी पैदाअिश भी रोकनी चाहिये । विज्ञानका अुपयोग करके गायकी नसल सुधारनी चाहिये । यह अुस विचारका पहला कदम होगा ।

गाय भार रूप कैसे हो सकती है ? वह खाद देती है, दूध देती है, खेतीके लिअे बैल देती है, और मरनेके बाद अुसके चमड़ेका और हड्डीका भी अुपयोग होता है । अिस तरह जीते जी और मरनेके बाद भी जो प्राणी अितना अुपयोगी है, वह बोझ रूप कैसे हो सकता है ?

हम बुद्धिहीन बन गये हैं, अिसलिअे अुसका बोझ मालूम होता है । लेकिन सही विचार करके गोसेवाकी कोशिश व्यक्तिगत, सामूहिक और सरकारी तौर पर करनी चाहिये । वैज्ञानिकोंको भी अिसमें योग देना होगा । अैसी नसल पैदा करनी चाहिये, जिससे अुत्तम दूध और अुत्तम बैल हमें मिल जायँ ।

गायकी अुन्नतिमें जो जो चीजें रुकावटें डालें, अुन्हें दूर करना चाहिये । वनस्पतिके बारेमें आपके सामने प्रस्ताव आयेगा । अुस पर भी सोचिये । आग्रह किसी चीजका नहीं होना चाहिये । हरअेक बात शास्त्रीय ढंगसे सोचनी चाहिये । गाय बैलकी अुन्नतिमें अगर वनस्पति बाधक होती है, घीकी मिलावटमें अुसका अुपयोग होता है, तो समझदारी अिसीमें होगी कि हम वनस्पतिको बन्द कर दें, चाहे अुसमें कितना ही पैसा और शक्ति क्यों न लगी हो ।

महाभारतमें अेक कहानी है, जिसमें धर्म बैलके रूपमें भगवानसे शिकायत करता है कि देखिये मनुष्य मुझे कितनी तकलीफ देता है । भगवान प्रगट होकर अुसे वरदान देते हैं कि जिस देशमें तेरी अुपेक्षा की जायगी, अुसकी अुन्नति नहीं होगी । अिसमें बैलके लिअे आशीर्वाद है और अुसकी अुपेक्षा करनेवालोंके लिअे शाप ।

दा० मूं०

आरोग्यकी कुंजी

लेखक : गांधीजी; अनुवादक : सुशीला नय्यर

गांधीजीके शब्दोंमें अिस किताबको " विचारपूर्वक पढ़नेवाले पाठकों और अिसमें दिये हुअे नियमोंपर अमल करनेवालोंको आरोग्यकी कुंजी मिल जायगी, और अुन्हें डॉक्टरों तथा वैद्योंकी देहली नहीं तोड़नी पड़ेगी । "

कीमत १० आना डाकखर्च ०–२–०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

१६ जनवरी १९४९

साम्प्रदायिक मनोवृत्ति

सरकारने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर फिरकेवाराना संस्था होनेके कारण रोक लगा दी है, और अुससे सम्बन्ध रखनेवाले कअी हजार लोगोंको जेलमें डाल दिया है। मैं नम्रतासे सरकार और सामाजिक कार्यकर्ताओंको यह चेतावनी देता हूँ कि वे अितनेसे ही अपने मनमें सन्तोष न मान लें। कांग्रेसको अपने खुदके तजरबेसे यह जानना चाहिये कि किसी संस्था पर कानूनी रोक लगाने और अुसके मेम्बरोंको बड़े पैमाने पर जेलमें डालनेसे अुसका रोका हुआ काम छिपे तौर पर चलने लगता है। साथ ही, हजारों नौजवान स्त्री-पुरुषोंको — जिनमेंसे बहुतसे छोटी अुमरके लड़के लड़कियाँ हों — जेलमें डालने, अुन पर लाठी चलाने और अिसी तरहकी दूसरी दमनकी कार्रवाअियाँ करनेसे लोग असली कारणको तो भूल जाते हैं और अुसके नतीजोंको ही देखते हैं, जो जाहिरा तौर पर गुनाह करनेवालों और अुनके घरके लोगोंको मुसीबतोंमें डालते हैं और दुःख पहुँचाते हैं। अनजानमें ही लोग कानून और व्यवस्थाको सँभालनेवाली सरकारको नापसन्द करने लगते हैं और अुसकी कार्रवाअियोंके शिकार बननेवालोंके दोस्त हो जाते हैं। ब्रिटिश हुकूमतके जमानेमें यही हुआ, जिससे कांग्रेसको फायदा पहुँचा। अब फिर वही हो सकता है, जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और दूसरी फिरकेवाराना संस्थाओंके लिअे फायदेमन्द साबित होगा। हिंसाकी बुनियाद पर खड़े किसी भी तरीकेकी तरह दमनका तरीका न्यूटनके कुदरतके तीसरे कानूनके मुताबिक ही काम करता है। आप जितने ज्यादा जोरसे किसी संस्था पर चोट करेंगे, अुतना ही ज्यादा बड़ा नुकसान वह आपको पहुँचायेगी। मौजूदा मामलेमें नुकसान यह हो सकता है कि जिस साम्प्रदायिक मनोवृत्ति (फिरकेवाराना जहनियत) को हम मिटाना चाहते हैं, वही ज्यादा जोरोंसे बढ़ सकती है।

हिन्दुस्तानमें अैसा होनेकी बहुत बड़ी संभावना है। शरणार्थी लोग आज भी गुस्सेसे भरे हुअे हैं और आम तौर पर फिरकेवाराना जहनियतवाले हैं। हिन्दू महासभा तो खुले आम अपनी अिस मनोवृत्तिको जाहिर करती है। सिक्खोंका बहुत बड़ा हिस्सा भी साम्प्रदायिक मनोवृत्ति रखता है। देशमें अैसे बहुत कम स्कूल और कॉलेज होंगे, जिनमें साम्प्रदायिक मनोवृत्ति फैलानेवाले कुछ शिक्षक और प्रोफेसर न हों। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि कांग्रेसी हिन्दू भी हिन्दू-मुस्लिम सवालों पर अुसी निगाहसे विचार करते हैं, जिस तरह हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ करते हैं। अुन्हें लगता है कि गांधीजीने मुसलमानोंके पक्षकी जो हिमायत की थी, वह अुनकी मुसलमानोंको खुश करनेकी कमजोर और गैर-जरूरी नीति थी। हिन्दी-हिन्दुस्तानी भाषा और अुसकी लिपि (लिखावट) के सवाल पर चलनेवाली बहसोंमें वे अपनी अिन भावनाओंको अच्छी तरह जाहिर कर देते हैं। फिरकापरस्तीके सवाल पर समाजवादी लोग शायद बहुतसे कांग्रेसियोंसे ज्यादा साफ दिमाग रखते हैं। लेकिन सत्ताके लालचने दोनोंको अैसे समय अेक दूसरेके विरोधी बना दिया है, जब अुन्हें फिरकेवाराना जहनियतको मिटानेके लिअे अेक साथ काम करना चाहिये था। नतीजा यह है कि कांग्रेससके नेताओंमें जो साम्प्रदायिक मनोवृत्ति नहीं रखते, अुन्हें अपनी ही संस्थामें काम करना थोड़ा मुश्किल हो रहा है। अगर सख्त छानबीनके बाद यह मालूम हो कि कांग्रेसमें फिरकापरस्तीसे दूर रहनेवाले कांग्रेसी अल्पमतमें हैं, तो मुझे कोअी ताज्जुब नहीं होगा।

अिन सब बातोंका यह तकाजा है कि राष्ट्रके दिल और दिमागको साफ करनेके लिअे मजबूत रचनात्मक कोशिश की जानी चाहिये; साथ ही राजनीतिक पार्टियों — खासकर कांग्रेस और समाजवादी पार्टी — के संगठनके लिअे देशप्रेमकी दृष्टिसे सच्ची कोशिश करनी चाहिये। सिर्फ साम्प्रदायिक संस्थाओंको कानूनके हथियारसे दबा देनेसे ही अिस दिशामें बड़ी सफलता नहीं मिल सकेगी। क्योंकि अगर खुद कांग्रेसमें ही फिरकेवाराना जहनियत बढ़ जाय, तो हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघके काम न कर सकने पर भी कोअी नतीजा नहीं निकलेगा।

अिस बातमें गैर-हिन्दू जातियोंका — मुसलमानों, अीसाअियों, पारसियों, सिक्खों और दूसरोंका — भी मदद देनेका फर्ज है। अुन्हें समान राष्ट्रीयता (कौमियत) की भावना पैदा करनेमें सहयोग देना चाहिये। कांग्रेस, समाजवादी और रचनात्मक काम करनेवाले लोग हर बातमें साथ मिलकर काम कर सकें या न कर सकें, लेकिन कमसे कम राष्ट्रमें असाम्प्रदायिक मनोवृत्ति फैलानेका काम तो अुन्हें साथ मिलकर ही करना चाहिये। किसी भी राष्ट्रवादीको यह न समझना चाहिये कि यह काम आसान है और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, हिन्दू महासभा, मुस्लिम लीग और दूसरी साम्प्रदायिक संस्थाओंको कामयाबीके साथ लम्बे समय तक दबाये रखनेसे सब बातें ठीक हो जायगीं। हम याद रखें कि यह कोअी मामूली काम नहीं हो सकता, जिसने गांधीजीको कअी बार अपनी जिन्दगी दाव पर चढ़ानेके लिअे मजबूर कर दिया था और आखिरकार अिरादतन अुनकी हत्या कराअी। कोअी अपने मनको अिस तरह समझा कर सन्तोष न कर ले कि गांधीजीका खून अेक पागलका काम था। वह तो सारे राजनीतिक विचारोंके हिन्दुओंके अेक बहुत बड़े भागने अपनेमें जो साम्प्रदायिक मनोवृत्ति पाली-पोसी थी, अुसका अेक जरिया, अेक पुरजा भर था। बम्बअी, ५–१–'४९

(अंग्रेजीसे) किशोरलाल मशरूवाला

सच्चे और पूरे शरीफ आदमी

आज सुबहके अखबारोंमें सैयद अब्दुल्ला ब्रेलवीकी मौतका समाचार पढ़नेके लिअे मैं बिलकुल तैयार न था। कुछ ही दिन पहले मुझे अुनके दो पत्र मिले थे। अुनसे अैसा नहीं मालूम होता था कि अुनकी तन्दुरुस्तीमें कोअी खराबी है। लेकिन दिलकी धड़कन बन्द हो जानेसे होनेवाली मौत शायद ही कभी अपने आनेकी पहलेसे सूचना देती है।

अुन्होंने अखबारनवीसीमें खूब नाम कमाया था। वे अखिल भारत पत्रकार परिषद (अे० आअी० अेन० अी० सी०) के सभापति रह चुके थे। लेकिन अखबारनवीसी अुनके व्यक्तित्वका चमकीला और शानदार हिस्सा होते हुअे भी छोटा हिस्सा था। वे अखबारनवीस न होकर दूसरे कुछ होते, तो भी अुन्हें जाननेका मौका पानेवाला हर आदमी अुन्हें अपना प्यारा और आदरणीय दोस्त मानता। अपने जिन्दगीभरके दोस्त श्रीयुत वैकुण्ठभाअी, श्री० गगनबिहारी मेहता और स्व० महादेव देसाअीकी तरह वे भी भलमनसाहत और शराफतकी जीती-जागती मूर्ति थे। श्री वैकुण्ठभाअी और श्री गगनबिहारी मेहताके वे सिर्फ गहरे दोस्त ही नहीं थे, बल्कि अुनके परिवारके ही आदमी बन गये थे। वे सब लम्बे अरसे तक साथ साथ रहे थे। स्व० लल्लुभाअी शामळदास तो अुन्हें अपना अेक लड़का ही मानते थे। धर्मके भेद भी अुन्हें अलग नहीं कर सके। मैं सन् १९३० में अुनके सम्पर्कमें आया, जब हम दोनों नासिक रोड सेन्ट्रल जेलमें कैद थे। वहीं मुझे अुनकी दरियादिली, विचारोंकी अुदारता और कट्टर असाम्प्रदायिकताका पता चला था। अिन सब गुणोंसे ज्यादा अुनकी जिस खूबीका मुझपर सबसे ज्यादा असर हुआ, वह यह थी कि वे अेक सच्चे और पूरे शरीफ आदमी थे।

बम्बअी, १०–१–'४९ किशोरलाल मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

खादमें काँच वगैराकी मिलावट

ता. २२–८–'४८के 'हरिजनसेवक' में श्री बलवन्तसिंहका 'अच्छे काम निष्फल क्यों जाते हैं?' लेख छपा है। अुसका जवाब जबलपुरके मिश्र खाद योजनाके बायोकेमिस्ट श्री को० सु० कृष्णरावने मध्यप्रान्तके खेती-खातेके मारफत मेरे पास 'हरिजनसेवक'में छापनेके लिअे भेजा है। अुसकी भाषा सुधारकर और कुछ संक्षेप करके मैं खुशीके साथ नीचे दे रहा हूँ:

"अिस बातमें कोअी शक नहीं कि 'मिश्र-खादकी योजना'को सफल बनानेके लिअे अुसके सारे काम अुसी भाषामें होने चाहियें, जिसे किसान भाअी ठीक ठीक समझ सकें; यानी हर प्रान्तका काम अपनी प्रान्तीय भाषामें होना चाहिये। मुझे जहाँ तक खयाल है, यही होता भी आया है।

"नागपुरकी सभा विशेषज्ञोंकी सभा थी। भारतीय भाषाओंमें वैज्ञानिक शब्दावली पर्याप्त रूपमें न होनेसे अिस सभाकी कार्रवाअी विशेष रूपमें अंग्रेजीमें हुअी। लेकिन अिससे यह खयाल करना गलत है कि किसीके दिलमें मातृभाषाके प्रति कम आदर या कम श्रद्धा थी।

"लेखक महोदयने जो दूसरे प्रश्न और अुसके व्यावहारिक हलके बारेमें चर्चा की है, अुसका सरल और अुपयुक्त हल हम खुद बहुत समयसे खोज रहे हैं। खाद तैयार करते समय यदि शहरके कचरेमेंसे काँच, अींट, टीन वगैराके टुकड़े अलग करनेकी कोशिश की जाय, तो खादका दाम अितना बढ़ जायगा कि अुसका अुपयोग आर्थिक दृष्टिसे असम्भव हो जायगा। जो सुझाव लेखकने दिया है, वह भी कमसे कम आज तो पूरी सफलताके साथ अमलमें नहीं लाया जा सकता। क्योंकि शहरवासी अितने समझदार नहीं होते कि अपना कूड़ा-कचरा अेक निश्चित की हुअी कोठीमें ले जाकर डालें। अिसके मुख्य कारण हैं: सामाजिक स्वच्छताकी भावनाका अभाव, और नागरिक कर्तव्य पालनकी लापरवाही। हर शहरमें हम देखते हैं कि कचरेकी कोठीके भीतरकी अपेक्षा बाहर ज्यादा कचरा पड़ा रहता है। अिस गिरी हालतको ध्यानमें रखते हुअे यह आशा करना गलत है कि म्युनिसिपैलिटियाँ यदि दो कोठियाँ रख दें, तो लोग अपना कचरा अलग अलग करके डालनेकी मेहनत अुठावेंगे। अिस सुझाव पर अमल करनेके पहले यह लाजमी हो जाता है कि हम प्रत्येक शहरीको अूपर बताये गये अुपयोगी और अनुपयोगी कचरेको अलग अलग अिकट्ठा करनेकी तालीम दें।

"यदि हमें दुनियामें आगे बढ़ना है और हमारी स्थिति सुधारना है, तो सिर्फ काश्तकारोंको ही नहीं, बल्कि हरअेक देशवासीको — गाँववासी और शहरवासीको — वनस्पति व अन्नके रूपमें धरती मातासे लिये गये ऋणको चुकानेके पवित्र कर्तव्यको भली भाँति समझना होगा। यह जाग्रति आ जाने पर चीन और जापानके लोगोंकी तरह हमारे देशवासी भी मिश्र खादका महत्व समझने लगेंगे।

"अिस काममें पूरी सफलता प्राप्त करनेके लिअे सामाजिक शिक्षा और सक्रिय प्रचारकी बहुत बड़ी जरूरत है, और सामाजिक कार्यकर्ताओंमें अनुशासन और राष्ट्र धर्म पालनेकी भावनाका होना जरूरी है।"

श्री बलवन्तसिंह और श्री रावके विचारोंमें कोअी खास मतभेद नहीं दिखता। भारतीय भाषाओंमें वैज्ञानिक शब्दोंकी कमीके कारण अंग्रेजीका आसरा लेना पड़ता है, यह कारण ठीक नहीं है। जो सच बात है, अुसे ही स्वीकार कर लेना अच्छा है। और वह यह है कि हमें अंग्रेजीका मुहावरा अितना ज्यादा हो गया है कि कभी लोगोंको अपनी मातृभाषामें भी बोलना मुश्किल मालूम होता है। फिर, जहाँ सारे देशके बड़े अफसर अिकट्ठे हुअे हों, जिनमेंसे कअी तो राष्ट्रभाषाके दस वाक्य भी नहीं बोल सकते, अुनकी सभामें और क्या हो सकता है? और यह तब तक अिसी तरह होता रहेगा, जब तक हम अिसे मिटाने और अिसकी जगह राष्ट्रभाषाको लानेका निष्ठाके साथ जोरदार प्रयत्न न करेंगे। हमें यह सोचना चाहिये कि हमारे किसानोंमें कभी अितने होशियार हैं कि वे बगैर वैज्ञानिक परिभाषाका अुपयोग किये भी विज्ञानकी सूक्ष्मता और बूझ रखते हैं, और अपने अनुभवके बल पर बहुत कुछ तो विशेषज्ञोंको भी बता सकते हैं। हम अुनसे अुनके अनुभवका लाभ ले सकते हैं। लेकिन अंग्रेजीकी दीवार खड़ी किये जानेसे यह नहीं हो पाता।

श्री रावने लोगोंके अज्ञान और लापरवाहीकी शिकायत की है। अुस पर श्री बलवन्तसिंहने भी जोर दिया है। लोगोंको यह तालीम हर कोशिशसे देना जरूरी है। अिस प्रौढ़ शिक्षामें सिर्फ निरक्षरोंको ही, नहीं बल्कि युनिवर्सिटीके पदवीधरोंको भी लेना है। यह सबको सीखना है।

अब अेक दलील रही। श्री रावका कहना है कि खाद और कचरा अलग अलग किया जाय, तो खाद बहुत ही महँगी हो जायगी। यह बात अेक हद तक सच है। लेकिन अिसका अिलाज यही है कि अेक तरफसे लोग शौककी पचास चीजोंका त्याग करें और अिन जरूरी चीजोंके ज्यादा दाम दें। और दूसरी तरफसे यह कि चूँकि अिसमें कचरा फेंकनेवाले लोगोंका कसूर है, अिसलिअे अुसे साफ करनेका खर्च शहर और कस्बोंको अुठाना चाहिये। यह नहीं कहा जा सकता कि कम दामके नामसे किसान वह चीज खरीदे, जो अुसके खेतको बिगाड़नेवाली हो।

बम्बअी, १–१–'४९ किशोरलाल मशरूवाला

गवर्नर जनरल और राजदूत

[१९ दिसम्बर १९४८के 'हरिजनसेवक'में 'अधिकारियोंके लिअे सवाल' नामका जो लेख छपा था, अुसके जवाबमें हमारे प्रधान मंत्री, पंडित जवाहरलाल नेहरूकी तरफसे नीचेका जवाब भेजा गया है। जनता अुसका स्वागत करेगी, अुससे तसल्ली पायेगी और अपने मनसे यह विचार निकाल देगी कि हिन्द सरकार विदेशोंमें रहनेवाले अपने राजदूतोंके लिअे बड़ी बड़ी रकमें खर्च कर रही है। गवर्नर जनरलकी तनखाहके बारेमें जो कल्पना कर ली गयी थी, अुससे दर असल काफी कम तनखाह अुन्हें मिलती थी, और अब अुसमें लगभग रु. १७०० माहवारकी और कमी कर दी गअी है। सरकारी दावतोंमें शराबके अिस्तेमाल पर भी रोक लगा दी जायगी। मुझे अेक दूसरे जरियेसे प्रामाणिक सूचना मिली है कि गवर्नर जनरलकी तनखाहमें और भी न की जा सकनेवाली भारी कमी कर दी गअी है; मिसालके लिअे, वे किसी मेहमानको बुलाते हैं, तो अुन्हें अुसके ठहरने-खानेका खर्च तय की हुअी दरके हिसाबसे देना होगा, और अुनका भत्ता वगैरा सब बजटमें दर्ज की हुअी मदें होती हैं — यानी अुनकी बचत रकमें सरकारी खजानेमें ही रहती हैं।

बम्बअी, ४–१–'४९ — कि० मशरूवाला]

आपने १९ दिसम्बर १९४८ के 'हरिजनसेवक'में 'अधिकारियोंके लिअे सवाल' नामका जो लेख छापा है, अुसके सवाल नं० १ और ३ का जवाब क्या मैं दे सकता हूँ?

सवाल नं० १: अिन्कम-टैक्स और सुपर-टैक्स काट लेने के बाद लगभग रु. ७,२०० तनखाहके रूपमें हर माह गवर्नर जनरलको मिलते हैं। अुसका बड़ा हिस्सा अैसे जरूरी खर्चमें लगता है, जिसे आजकी हालतोंमें टाला नहीं जा सकता। अब गवर्नर जनरलकी तनखाह रु. ५,५०० तय करनेका फैसला कर लिया गया है, जिस पर अिन्कम-टैक्स नहीं लिया जायगा।

सरकारी महल सिर्फ गवर्नर जनरलकी ही रहनेकी जगह नहीं है। वहाँ राजके मेहमान भी ठहराये जाते हैं और राजकी

www.vinoba.in

तरफसे आदर-सत्कारके लिअे मजलिसें भी की जाती हैं। अुसमें बहुतसी आफिसें भी हैं और वह मंत्रि-मण्डलके मिलनेकी जगह भी है। अुसके कुछ आदर-सत्कारके कमरे हिन्दुस्तानी कलाकी नुमाअिशके लिअे काममें लिये जा रहे हैं। अिस तरह सरकारी महल पर होनेवाला खर्च गवर्नर जनरलके लिअे नहीं होता, बल्कि राजसे सम्बन्ध रखनेवाले तरह तरहके कामकाजके लिअे होता है।

सवाल नं० ३—यह बात सही नहीं है कि हिन्दके राजदूतों (अेलचियों) को रु. ३,००० और १२,०००के बीच तनखाहें दी जाती हैं। राजदूतोंको तीन वर्गोंमें बाँट दिया गया है—पहला, दूसरा और तीसरा। अिनमेंसे हरअेक वर्गके राजदूतको क्रमसे ३,५००, ३०००, और २७५० रुपये तनखाह दी जाती है। अिसके साथ, अुन्हें नुमाअिन्दगीका भत्ता मिलता है, जो हर जगहके लिअे अलग होता है। यह भत्तेकी रकम अुन्हें अिस अुम्मीदसे दी जाती है कि अिसमें अुनकी आदर-सत्कारके लिअे की जानेवाली मजलिसोंका और जिन देशोंमें वे रखे गये हैं वहाँके रहन-सहनका बढ़ा हुआ खर्च पूरा हो सकेगा। रहन-सहनका खर्च खास तौर पर पैसेके फुलाव और विनिमयकी दरोंके कारण अूँचा हो गया है, और हमारे राजदूतों और अुनके साथ काम करनेवालोंको मौजूदा तनखाहों और भत्तोंमें भी अपना गुजारा करना अक्सर मुश्किल मालूम हो रहा है।

नीचेके आँकड़ोंसे मालूम होगा कि हमारे राजदूतोंको जो नुमाअिन्दगी भत्ता दिया जाता है, वह दूसरे देशोंके राजदूतोंको दिये जानेवाले भत्तेके मुकाबले बहुत मामूली है। मिसालके लिअे, पेरिसमें रहनेवाले ग्रेट ब्रिटेनके राजदूतको रु. १७,८०० नुमाअिन्दगी भत्ता मिलता है और हमारे राजदूतको रु. ३,५००। कैरोमें रहनेवाले ब्रिटिश राजदूतको रु. ८,८०० मिलते हैं, जब कि हमारे राजदूतको रु. ३,५०० मिलते हैं। अीरानमें रहनेवाले ब्रिटिश राजदूतको रु. ४,००० मिलते हैं और हमारे राजदूतको रु. २,००० माहवार मिलते हैं।

राजकी तरफसे अिस तरहकी हिदायतें दे दी गअी हैं कि सरकारी दावतोंमें शराब अिस्तेमाल न की जाय।

नअी दिल्ली, ३१-१२-'४८ विनीत,
(अंग्रेजीसे) (सही) अे० वी० पअी
प्रधान मंत्रीका मुख्य प्राअिवेट सेक्रेटरी

प्रादेशिक विकास कान्फरेन्स

ता० १९-१२-'४८ के 'हरिजनसेवक'में 'हिन्दकी आज़ादीकी रक्षाके लिअे कुछ सुझाव' नामके लेखमें जिस प्रादेशिक विकासका जिक्र किया गया है, अुसमें दिलचस्पी रखनेवालोंकी कान्फरेन्स अिंडियन टाअुन अेण्ड कन्ट्री प्लानिंग अेसोसियेशनके मातहत २० फरवरी १९४९के दिन सिंहगढ़ किलेमें होगी। कान्फरेन्समें हिस्सा लेनेवालोंके लिअे गुंजावाणी और मूठाकी तराअियोंके हिस्सेमें वहाँकी हालतोंका अध्ययन करनेके लिअे दौरेका अिन्तजाम किया जायगा और दौरेके पहले पूनामें ता० १४ (सोमवार) से १८ फरवरी (शुक्रवार) तक अंग्रेजी और मराठीमें पाँच भाषण होंगे। अिससे कान्फरेन्समें आनेवाले लोगोंको अपने दौरेमें अध्ययन करने और कान्फरेन्सकी कार्रवाअियों व बहसोंमें समझपूर्वक हिस्सा लेनेमें मदद मिलेगी।

अिस कान्फरेन्समें दिलचस्पी लेनेवाले सब भाअियोंसे विनती है कि वे नीचेके पते पर पत्र-व्यवहार करें :

(अंग्रेजीसे)
अेस० आर० भागवत
आर्गेनाअिज़र, 'पीपल्स कॉमनवेल्थ रिजनल डवलपमेण्ट आर्गेनाअिज़ेशन
२८२, सदाशिव पेठ, पूना २

www.vinoba.in

गुणवान जानवर और अहसान न माननेवाला अिन्सान

"आपने 'हरिजनसेवक' में गौमाताके बारेमें लिखकर अुसके प्राण बचाये हैं। अुसी तरह आपने प्रजापति यानी कुम्हारोंको और नाअियोंको अिन्साफ दिलवानेकी कोशिश की है। ये दोनों बातें ठीक हैं। लेकिन साथ ही मेरी अेक अर्ज है कि :

"कुम्हार—प्रजापतिके गुलाम गधेकी हालतकी ओर ध्यान देना बहुत जरूरी है। अिस परोपकारी, शान्त और गूँगे प्राणिको ये लोग खूब तकलीफ देते हैं और अुसके सीधेपनका दुरुपयोग करते हैं। यह जानवर न किसीको मारता है, न काटता है और नाथ-डोर जैसे बन्धनोंके बगैर काम करता है। ये लोग अुसकी पीठपर तीन-चार मन या जितनी मरजी हो अुतना बोझ लादते हैं और फिर अुसकी पीठपर बिना जरूरत डण्डे लगाना भी लगातार जारी रखते हैं। अिन निर्दयी लोगोंको मारनेमें जरा भी दया नहीं आती। अितना ही नहीं, लेकिन अिस बेहिसाब बोझ और मारसे अुसके शरीर पर जो चाँद पड़ जाते हैं अुनकी भी ये लोग परवाह नहीं करते। गधेसे ये लोग सवेरेसे तीसरे पहर तक काम लेते हैं। पर वह जब लूला-लँगड़ा हो जाता है, तो अुसे चाहे जहाँ मारा मारा फिरने देते हैं और कौवे वगैरा पक्षी कुरेद कुरेद कर अुसकी जान ले लेते हैं। ये लोग अुसे अच्छी घास, कड़ब या चारा खिलाते हों, यह नहीं मालूम होता, न यही दिखाअी देता कि ठंढी, गरमी या बरसादमें ये लोग अुसके लिअे छाया या छप्परकी तजवीज करते हों।

"अिस प्राणीकी कमाअी पर ये लोग मजे करते हैं, अपने लिअे बड़े बड़े मकान बँधवाते हैं, लेकिन अिस गरीब जीवको कभी-कदास ही छिलके या बिनौले देनेकी मेहरबानी करते हैं; नहीं तो यह प्राणी घूरे घूरे भटक कर पेट भरता है और अिनकी चाकरी बजाता है, और अिसी तरहकी गुलामीमें बुरी मौत मरता है।

"अिसलिअे मेरी बिनती है कि यदि आपको अुचित दिखाअी दे, तो अिस परोपकारी प्राणीको योग्य संरक्षण दिलवा कर अिसका आशीर्वाद लीजिये। मालूम होता है संस्कृत शास्त्र और आम लोगोंने अछूतकी तरह गधेकी ओर भी भारी तिरस्कार बतलाया है। अुदाहरणके लिअे लीजिये : 'पशूनां चांडाल: गर्धभ:' (पशुओंमें चाण्डाल गधा है)। दूसरी कहावतें हैं : 'गायको दुह कर गधेको पिलाना', और 'गधेने खेत खाया पापमें न पुनमें'। अिसी तरह किसी भी आदमीकी अिज्जत गिराना हो, तो अुसे कहते हैं 'गधा है'। समझमें नहीं आता कि गधेने अिनका क्या बिगाड़ा है? मैं तो समझता हूँ कि सिर्फ परोपकारी, शान्ति रखनेवाला और सब कुछ सह लेनेवाला होनेके कारण ही अछूतोंकी तरह अिसका भी नाजायज फायदा अुठाया गया है। अिस अनाथ जीवको अिन्साफ दिलवानेके लिअे किसीने भी अुसका पक्ष लिया हो, अैसा न कहीं दिखाअी देता है न सुना जाता है।"

जिन भाअीने यह अूपरका खत लिखा है, वे ७५ बरसके अेक रामानन्दी साधु हैं। अिन्होंने जो लिखा है अुसका अेक अेक शब्द सच है। शामळ भट्ट लिख गये हैं कि 'जो बुरा करनेवालेका भला करता है, अुसे ही अिस संसारमें सच्चे अर्थोंमें विजय हासिल हुअी है'। यह गूँगा प्राणी अिस तरह बरतता है मानो यही अुसका हमेशासे चला आता हुआ सनातन जातिधर्म और कुलधर्म हो। पर कृतघ्नी (अहसान न माननेवाला) अिन्सान अुसे बुरेसे बुरे ढंगसे हमारे देशमें रखता है। जिन बहुओं पर अपने पतियोंका प्यार नहीं होता, अुन पर जो जुल्म गुजारे जाते हैं अुनकी बातें कभी कभी हम पढ़ते या सुनते हैं। गधेके साथ हमारा बरताव ठीक

अुसी तरहका होता है। जिस ढंगसे हम अपने गाय, बैल, भैंस, भैंसे, घोड़े, गधे, कुत्ते वगैरा प्राणियोंको रखते हैं, वह तो हमारी जड़ता और निर्दयताकी निशानी है। कोअी मांस खानेवाला देश अपने प्राणियोंके साथ हमारे जैसी कृतघ्नता (अहसान न माननेकी वृत्ति) और लापरवाही नहीं दिखलाता। स्पेन, अुत्तर अफ्रीका, सीरिया, पैलेस्टाअिन वगैरा देशोंमें राजा और अमीर-अुमराव लोग गधे पर सवारी करते हैं, अुसे गाड़ीमें भी जोतते हैं। वहाँ गधे पर बैठना शरमकी बात नहीं मानी जाती। अिसलिअे वे गधेकी घोड़ेकी तरह ही सार-सँभाल करते हैं। वहाँ अेक-अेक गधेकी कीमत ५०० से १००० रुपये तक होती है। हम गधेको कम बुद्धिवाला प्राणी मानते है और घोड़ेको बुद्धिमान मानते हैं। लेकिन प्राणियोंके जानकारोंकी राय है कि अगर अिन दोनों प्राणियोंका मुकाबला किया जाय, तो घोड़ेसे गधा ही ज्यादा बुद्धिसे बरतता है। जो चीज जानी हुअी न हो, जैसे पानीका गड्ढा, अुसे देखते ही यह घोड़ेकी तरह चमकता नहीं, न भागने लगता है। ठहरकर विचार करता है। बुद्धिकी कमजोरीके लिअे अंग्रेजीमें घोड़बुद्धि (horse-sense) शब्द काममें लिया जाता है।

बिहार चरखा संघने कुछ बरस पहले अपनी गाड़ीमें दो अच्छे गधे जोतनेकी नअी बात शुरू की थी। मुझे नहीं मालूम कि वह अब भी चालू है या नहीं। लेकिन यह रिवाज अच्छा था। हममें बुद्धि हो तो हम गधेको पूरी तरह कीमती प्राणी बना सकते हैं। लेकिन यह तभी हो सकता है, जब हमारी बुद्धि विकसित हो। अेक कुम्हार संत अपने गधेको दादा, बाबा, अदा, 'मेरे राम' वगैरा कहकर बुलाते थे। लोग जब अुन्हें चिढ़ाते, तो वे कहते कि गायसे गधा कोअी कम पवित्र या कम पूजा लायक प्राणी नहीं है। यह भी मेरे रामका ही रूप है। अपने प्राणियोंकी ओर हमारी अिस तरहकी वृत्ति (खयाल) होनी चाहिये। मैं महंतजीकी दलीलोंका दिलसे समर्थन करता हूँ। अिसमें शक नहीं कि अिस गरीब प्राणीका आशीर्वाद लेने जैसा है।

बम्बअी, १५-१२-'४८ किशोरलाल मशरूवाला

(गुजरातीसे)

टिप्पणियाँ

किताबी कायदा और नीतिका कायदा

"अुड़ीसामें (?) तिनेवेली नामकी जगहमें अेक औरतको जब अुसके पतिने घरसे बाहर निकाल दिया, तो अुसने अपने तीन बच्चोंको कुअेंमें फेंक कर मार डाला और खुद भी कुअेंमें गिरकर आत्महत्या करनेकी कोशिश की थी। तिनेवेलीकी सेशन्स अदालतने अुस औरतको गुनहगार ठहराकर अुसे जिन्दगीभरकी कैदकी सजा दी थी। अुस औरतने गुनाह कबूल किया था। लेकिन मद्रासकी सबसे बड़ी अदालतके जजोंने अुसे गुनहगार मानते हुअे भी यह बताया कि अुस औरतने बहुत गरीब हालतमें बच्चोंके लिअे खाना न मिलनेके कारण भूखसे धीरे धीरे दम तोड़ते देखनेके बजाय अुन्हें अेकदम मारकर खुद भी अुनके साथ ही मर जाना पसन्द किया था। अिन संजोगोंमें हम सरकारसे यह सिफारिश करते हैं कि अुस औरतकी सजा घटाकर अुसे सिर्फ अेक सालकी कैदकी सजा दी जाय।"

ता. ११-१२-'४८ के 'वन्देमातरम्' से अूपरकी कतरन भेजकर अेक बहन लिखती हैं:

"यह न्याय है या निरी बेरहमी? अैसी माँको आश्वासन देना चाहिये या जन्मकैद? पूज्य बापू जीते होते, तो पुकार पुकार कर कहते कि अे जज, अिसके लिअे राजकी व्यवस्थापिका सभाको सजा देनी चाहिये। अिस माँका दुःख मिटानेके लिअे तो अुसे आश्वासनके दो शब्द सुना।"

मेरा तो सजाओंमें विश्वास ही नहीं है। लेकिन न्याय या अिन्साफके नाम पर अदालतोंको कैसी हैवानियतभरी सजायें देनी पड़ती हैं, अुसकी यह आँख खोलनेवाली मिसाल है।

अिस औरतने भुखमरीसे तड़पते हुअे अपने तीन बच्चोंको कुअेंमें छोड़ा। खून करनेकी अिच्छासे मारा नहीं। वह खुद भी मरनेवाली ही थी। लेकिन संजोगसे बच गअी। अुसे सजा देनी ही पड़ेगी, यह कहनेवाले कायदेके लिअे क्या कहा जाय? अगर दयासे अुसे सजा देनी होती, तो फाँसीकी सजा देनेमें ही अुसके साथ दया होती। तब अुसका अधूरा काम पूरा हो जाता। अगर अुसके जीनेका बन्दोबस्त करनेके लिअे जन्म-कैद दी गअी हो, तो अुसका गुनाहके कलंकके साथ क्या सम्बन्ध?

और अचंभेकी बात तो यह है कि अिसमें बड़ीसे बड़ी न्यायकी अदालत भी कुछ कर नहीं सकती। वह सिर्फ सरकारसे सिफारिश कर सकती है। पहले अिंग्लैण्डमें किताबी कायदा और नीति (दिल) का कायदा दोनों अलग माने जाते थे। अिसलिअे दोनोंकी अलग अलग अदालतें भी होती थीं। अब दोनों अेक ही मानी जाती हैं। हिन्दुस्तानमें भी दोनों अेक ही मानी जाती हैं। फिर भी ये मामले बताते हैं कि अैसी बात दरअसल है नहीं। न्यायकी अदालतें किताबी कायदेसे बाहर जा नहीं सकतीं।

बम्बअी, २३-१२-'४८ कि० मशरूवाला

(गुजरातीसे)

कस्तूरबा ग्रामसेवा

कस्तूरबा ग्रामसेविका विद्यालय, मधुबनीकी छात्राओंने ग्रामसेवाके कामकी अमली शिक्षा लेनेके लिअे पूरा नवम्बर महीना गाँवोंमें बिताया। १४ छात्राओं और ६ बच्चोंका अेक दल पण्डौलके पास सागरपुर गया था और १६ छात्राओं और ३ बच्चोंका दूसरा दल मधुबनीके पास चकदह गाँवमें रहा। विद्यालयकी अेक अध्यापिका हर दलके साथ थी। छात्राओंका काम औरतों और बच्चोंको अपने अपने घर और अड़ोस-पड़ोसको साफ रखना, परदा, शराबखोरी, बेमेल शादी, बच्चोंकी शादी, अछूतपन वगैरा कुरीतियोंको दूर करना, औरतोंकी शिक्षा, तन्दुरुस्ती, नागरिकोंका फर्ज, और छोटे बच्चोंको पालना वगैरा बातोंको भाषण और बातचीतके जरिये समझाना था। छात्राओंने आसपासके २५ गाँवोंमें काम किया। चकदह गाँवमें बच्चोंकी अेक बालशाला चलाना, जिसमें करीब ४० बच्चे शरीक होते थे, और बड़ी अुमरकी औरतोंको कताअी-बुनाअी और दूसरे काम सिखानेके लिअे वर्ग चलाना अिस कामका अेक खास हिस्सा था।

छात्रायें परदेसे अपना मुँह ढँके बिना सलवार और कुर्ती पहनकर हर जगह अपने कामके लिअे गयीं। गाँवके बड़े-बूढ़ोंने पहले अुनका स्वागत नहीं किया। हाथमें झाड़ू, टोकरी और कुदाल लेकर गावके तालाब, कुओं और गलियोंको अुन्हें साफ करते देखकर कुछ तो बहुत घबराये या अचरजमें आ गये। पर जब अुन्हें मालूम हुआ कि ये सेविकायें कौन हैं और वे क्या करना चाहती हैं, तब अुन्होंने अपने बरताव पर खेद जाहिर किया और पूरी मदद देना शुरू किया।

पहला दस्ता आधा महीना सागरपुर और आधा महीना रामपट्टीमें रहा। अिन दोनों जगहों पर अुनके खानेका अिन्तजाम गाँववालोंने किया। चकदहमें, जो अेक बाढ़ पीड़ित गरीब गाँव है, विद्यालयकी तरफसे ही सब अिन्तजाम किया गया था। चकदहकी बालशालामें जो बच्चे आते थे, अुन्हें विद्यालयकी तरफसे दूध, तेल और साबुन दिया गया। आसपासके गाँवोंमें जब छात्रायें जाती थीं, तो वहाँके लोग अक्सर अुनके दिनके खानेका अिन्तजाम कर देते थे। छात्राओंकी सभाओं और दिलबहलावके कार्यक्रममें औरत, मर्द और बच्चे अच्छी तादादमें आते थे।

मधुबनी, ५-१२-'४८ भारती विद्यार्थी

संचालिका

कस्तूरबा ग्रामसेविका विद्यालय

www.vol

सर्वोदय समाज

सर्वोदय समाजकी समितिकी पहली बैठक मअी १९४८में दिल्लीमें हुअी थी । अुसमें समाजका पहला सालाना मेला साबरमतीमें करनेका ठहराया गया था । साथ ही यह भी तय हुआ था कि सेवकोंको आपसी सम्पर्कमें लानेके लिअे और विचार-विनिमयके लिअे कमसे कम तीन दिनका अेक सम्मेलन करना भी जरूरी है । सम्मेलन और मेलेके साथ, हो सके तो, आम जनताके लिअे अेक प्रदर्शनीका भी अिन्तजाम किया जाय । यह फैसला करनेमें श्री राजेन्द्रबाबू, आचार्य विनोबाजी, श्री शंकरराव देव, श्री श्रीकृष्णदास जाजू वगैरा मित्रोंने भी भाग लिया था ।

गुजरातके कार्यकर्ताओंने सालाना मेला साबरमतीमें करनेके समितिके फैसलेका खुशीसे स्वागत किया था और अुसके लिअे शुरूकी तैयारियाँ भी चालू कर दी थीं । लेकिन बदकिस्मतीसे अुत्तर गुजरातमें बरसात न होनेके कारण अिस साल अकाल पड़ गया । अिसलिअे गुजरातके कार्यकर्ताओंको सर्वोदय समाजका सालाना मेला साबरमतीमें करनेका निश्चय छोड़ देना पड़ा ।

अिस हालत पर विचार करनेके लिअे समितिकी बैठक नवम्बरमें दिल्लीमें हुअी थी । अिस बैठकमें सर्वोदय समाजके सेवकोंका सम्मेलन ता० २८, २९ और ३० जनवरी १९४९ को मध्य भारतमें किसी अनुकूल जगह पर करनेका विचार हुआ । लेकिन आखिरी फैसला जयपुरमें कांग्रेस अधिवेशनके मौके पर आचार्य विनोबाजी और दूसरे मित्रोंके साथके सलाह मशविरेके बाद करनेका निश्चय किया गया था । अुसके अनुसार ता० २० दिसम्बर १९४८को सर्वोदय समाजकी समितिकी बैठक जयपुरमें सर्वोदय प्रदर्शनीके अहातेमें आचार्य विनोबाजीकी कुटियामें हुअी थी । अुसमें आचार्य विनोबाजी, श्री जाजूजी, डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष, श्री शंकरराव देव, वगैरा मित्रोंने भाग लिया था । सालाना मेले और सम्मेलनके बारेमें समितिने नीचे लिखे फैसले किये :

राजघाट पर मेला

सर्वोदय समाजका सालाना मेला ता० ३० जनवरी १९४९को दिल्लीमें राजघाट पर किया जाय । दिल्ली और दिल्लीके आसपास रहनेवाले सर्वोदय समाजके सेवक अिसकी तैयारियाँ करेंगे ।

सर्वोदय दिन

साथ ही साथ सर्वोदय समाजकी समिति सुझाती है कि हिन्दुस्तानके हर अेक गाँवमें ३० जनवरीका '**सर्वोदय दिन**' मनाया जाय और सामुदायिक प्रार्थना, सामुदायिक कताअी और पूनी-यज्ञ, सामुदायिक ग्राम सफाअी, सार्वजनिक सभा वगैरा कामोंके द्वारा पूज्य बापूजीके सर्वोदयके विचार और आचारको आगे बढ़ानेकी कोशिश की जाय ।

१२ फरवरीको स्थानीय मेले

ता० १२ फरवरीके दिन जहाँ जहाँ पूज्य बापूजीके फूलोंका विसर्जन किया गया हो, अुन सभी जगहों पर स्थानीय मेले किये जायँ । अिन मेलोंके मौकों पर भी, जहाँ तक हो सके, प्रत्यक्ष अमली कार्यक्रम, प्रार्थना, व्याख्यान, प्रवचन, व साहित्य प्रचार वगैराके जरिये जनतामें सर्वोदयके विचार फैलाये जायँ ।

सेवकोंका सम्मेलन

सर्वोदय समाजके सेवकोंका सम्मेलन मार्च १९४९के दूसरे सप्ताहमें मध्यभारतमें अिन्दौरके पास राअूमें किया जाय । अिसका कार्यक्रम तीन दिनका रहे । ता० १५ फरवरी १९४९ तक सर्वोदय समाजके रजिस्टरमें दर्ज किये गये सभी सेवक अिस सम्मेलनमें भाग लेंगे । जो सेवक अिस सम्मेलनमें भाग लेना चाहते हों, वे अिसकी सूचना २८ फरवरी १९४९के पहले समाजके दफ्तर, वर्धा में कर दें, जिससे ठहरने वगैराका अिन्तजाम करनेमें सुविधा हो ।

वर्धा, ४-१-'४९

रघुनाथ श्रीधर धोत्रे
मंत्री, सर्वोदय समाज, वर्धा

www.vinoba.in

जयपुर गोसेवा सम्मेलनके कुछ प्रस्ताव

१. गाय और साँडकी पसन्दगी

गायोंकी तरक्कीके लिअे अिस बात पर पूरा खयाल रखना चाहिये कि प्रयोगोंके लिअे जहाँ प्रयोग किये जायँ, वहीं की गायें ली जायँ । जरूरी हो तो साँड दूसरी जगहसे लाये जा सकते हैं । अुसमें भी यह जरूरी है कि साँड अुसी नसलका लिया जाय, जिसमें अच्छा दूध देनेवाली गायें और खेतीके लायक अच्छे बैल पैदा करनेकी शक्ति हो ।

प्रस्तावक : महावीर प्रसाद पोद्दार; अनुमोदक : पुंडलीक कातगड़े

२. बधिया करनेकी जरूरत

देशके गोधनकी आज जो अवनति हो रही है, अुसे रोकनेके लिअे यह जरूरी है कि खराब साँडोंको कानूनसे बधिया कर दिया जाय । और जिन बछड़ोंको साँड न रखना हो, अुन्हें भी अेक सालके भीतर या दो दाँत आनेके पहले बधिया कर दिया जाय, ताकि वे नसल खराब न कर सकें ।

प्र० : पुरुषोत्तम नरहर जोशी; अ० : संत तुकड़ोजी महाराज

३. गो-सदनोंकी स्थापना

देशमें अच्छी नसल बढ़ानेके लिअे यह जरूरी है कि अपाहिज और जिनकी नसल चलना चाहने लायक न हो, अैसी सारी गायोंको दूर जंगलोंमें गो-सदन कायम करके जल्दसे जल्द भेज दिया जाय, जिससे अच्छी गायों पर अुनका बोझ न पड़े ।

प्र० : गोपालराव वालूंजकर; अ० : परशुराम म्हातरे

४. जमाया हुआ तेल

जमाये हुअे तेल यानी वनस्पतिकी बढ़ती हुअी पैदावार और अिस्तेमालसे शुद्ध घी मिलना मुश्किल हो गया है, असली घीका धन्धा गिरने लगा है और गोपालनका काम कठिन हो रहा है । और जिसका परिणाम आखिरमें खेती पर भी बुरा होगा । वनस्पतिका धन्धा फिरसे ज्यादा बढ़ानेकी कोशिश हो रही है । अिस सम्मेलनकी राय है कि आम जनताके हितकी दृष्टिसे सरकार तेल जमाना यानी वनस्पति बनाना जल्दसे जल्द बन्द करा दे ।

प्र० : श्रीकृष्णदास जाजू अ० : लाला हरदेव सहायजी

५. सरकारी प्रयोगके स्थान

आज हिन्द सरकार और प्रान्तीय सरकारोंके खेती और गोपालनके जो प्रयोग चल रहे हैं, वे सब प्रयोगशालाके दायरेमें ही रहते हैं । अुनका आम जनतामें प्रचार होनेके लिअे यह जरूरी है कि ये सारे प्रयोग आम जनताके बीच और अुसके द्वारा कराये जायँ, जिससे अुनका पूरा लाभ जनताको मिले और प्रयोगोंकी दिशा भी सही रहे ।

प्र० : राधाकृष्ण बजाज; अ० : डॉ० शर्मा

विषय-सूची

		पृष्ठ
दूसरा पहलू	... किशोरलाल मशरूवाला	३८१
कार्यकर्ताओंको सलाह	... दा० मूं०	३८१
हिन्दुस्तानी सभ्यताकी मध्यबिन्दु – गाय	... दा० मूं०	३८३
साम्प्रदायिक मनोवृत्ति	... किशोरलाल मशरूवाला	३८४
सच्चे और पूरे शरीफ आदमी	... किशोरलाल मशरूवाला	३८४
खादमें काँच वगैराकी मिलावट	... किशोरलाल मशरूवाला	३८५
गवर्नर जनरल और राजदूत	... अे० वी० पअी	३८५
गुणवान जानवर और अहसान न माननेवाला अिन्सान	... किशोरलाल मशरूवाला	३८६
सर्वोदय समाज	... र० श्री० धोत्रे	३८८
जयपुर गोसेवा सम्मेलनके कुछ प्रस्ताव	...	३८८
टिप्पणियाँ		
प्रादेशिक विकास कान्फरेन्स	... अेस० आर० भागवत	३८९
किताबी कायदा और नीतिका कायदा	... कि० मशरूवाला	३८७
कस्तूरबा ग्रामसेवा	... भारती विद्यार्थी	३८७